स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश
संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

ISSN- 2581-6128
R.N.I.- UPHIN/2001/3996

(हिंदी साप्ताहिक)

अंक 24 | रविवार, इलाहाबाद, 2 नवंबर 2025 | वर्ष 25

www.shaharsamta.com

सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान नवंबर 2025

अनीता दुबे विशेषांक

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

अनीता दुबे विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 24 | पृष्ठ 24 | वर्ष 25

रविवार, इलाहाबाद, 2 नवंबर 2025

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

इस अंक में

1. इस बार अनीता दुबे — उमेश श्रीवास्तव ....पृष्ठ 1

2. परिचय — अनीता दुबे ....पृष्ठ 2

3. संस्मरण — अनीता दुबे ....पृष्ठ 3

4. अनीता दुब की कविताएं — अनीता दुबे ....पृष्ठ 4

5. भाव पल्लवन — अनीता दुब ....पृष्ठ 18

6. अनीता दुबे की 9 लघुकथायें — अनीता दुबे ....पृष्ठ 19

7. अनीता दुबे की 3 कहानियाँ — अनीता दुबे ....पृष्ठ 22

इस बार अनीता दुबे

आस्था पथ पर चलते-चलते ,
जीवन के इस सोपान पर ।
खिली, मिली सी रहती हैं ,
जीवन के इस अविराम पर ।
कहा बहुत कुछ कविता में ,
सरसाये मन जन की बातें ।।
झेले हैं जीवन में उन ने
बहुत-बहुत सुंदर सी घातें।

तो बात हो रही है जबलपुर की अनीता दुबे की। कहानी, लघुकथा, संस्मरण हर क्षेत्र में कलम चलाने वाली कवयित्री अनीता दुबे का पूरा जीवन अभी तक कविता और कविता करते बीता । जीवन के इस पथ की अनेक बातों को अपनी कविताओं और गद्य-पद्य लेखन में रखने वाली कवयित्री अनीता दुबे की लेखनी आस्था और विश्वास से लबरेज़ है । अपनी बातों को बड़ी सादगी के साथ रखने वाली कवयित्री अनीता दुबे की लेखनी बेजोड़ है। उनकी कविताओं में सहजता सरसता मिलती है । कविता में अपनी बातों को बड़े सलीके से वह रखती हैं ।
बानगी देखिए
पहली बानगी

आस्था के सोपान पर धीरे-धीरे कदम बढ़ाती,
उपलब्धियों के पंख पर उड़ रही है नारी!
अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर मंडराती आकाश परी,
सागर की गहराइयों को छूती जलपरी!
मौसम की तरह रूप बदलती,
कभी हंसती कभी विलखती!

दूसरी बानगी

जीवन की किताब ये
कांटे और फूल दोनों ही,
इस पथ में मिल जाया करते।
कांटो में आनंद किसी को,
कुछ ऐसे फूलों से डरते।

तीसरी बानगी

वृंदावन में छाई धूम, बजते मुरली तान।
राधा संग श्याम रचें, प्रेमिल रंग महान।।
गोप-गोपिनी झूमते, गलियों में हरसात।
रंग-गुलाल उड़ाते, गूंजे जय-जय गात।।

कवयित्री **अनीता दुबे को अक्टूबर माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान** देते हुए संस्था प्रसन्न है संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरुर दें
अंत में ,

पथ जीवन का सुलभ रहे ,
यही कामना मेरी है ।
रचना के इस जगत वृत्त में ,
कलम सदा चलती जाए ।

उमेश श्रीवास्तव

अनीता दुबे

परिचय

पति- डॉ.के. एस. दुबे

शिक्षा

एम. ए. हिंदी,

एम.एस.डब्ल्यू(मास्टर ऑफ सोशल वर्कर)

वर्तमान में दायित्व

- नेपियर टाउन लेडीज क्लब जबलपुर की अध्यक्ष
- अखंड ब्राह्मण समाज की
- जिला महासचिव
- शहर समता विचार मंच की नगर अध्यक्ष
- रेड क्रॉस सोसाइटी की आजीवन सदस्य
- नारी विकास समिति मंडला की पूर्व सह सचिव

समीक्षा

1986 में श्री शरद जोशी जी के व्यंगयों की समालोचना की थी जिसमें पूरे प्रदेश में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

कई किताबों की समीक्षा भी की है।

वर्तमान में कहानी और कविता लिखने का क्रम जारी है।

संस्मरण

चुनाव जीतने की खुशी

अनीता दुबे

बात 1979 की है जब शाला के नायक के लिए चुनाव होना था। मुझे भी थोड़ा नेतागिरी का भूत था ।मैंने भी सोचा क्यों ?न मैं भी इस वर्ष शाल ा नायक के लिए चुनाव लंडू पिताजी खिलाफ थे ,पर मेरे फूफा जी ने समर्थन किया।

जबलपुर का सबसे बड़ा कन्याओं का हिंदी माध्यम का स्कूल था। एक कक्षा के आठ विभाग या भाग (सेक्सन)थे। जिसमें छठवीं से लेकर 11वीं तक इतनी छात्राओं से विद्यालय भरा रहता था।

बड़ा निष्पक्ष उस समय चुनाव हुआ करते थे । अध्यक्ष पद के लिए केवल कक्षा प्रतिनिधि ही अपना वोट देते थे मेरे विरोध में एक छात्रा जो खड़ी हुई वह बास्केटबाल की बहुत अच्छी खिलाड़ी थी।

जिस दिन परिणाम आना था तो शाला का बहुत बड़ा हाल है इसमें उप प्राचार्या ने जब पूछा -'कि अध्यक्ष पद के लिए कौन जीता होगा 'तो हाल में कुछ उसकी भी समर्थक लड़कियां थी वह सीमा का नाम लेने लगी पर जो मेरी समर्थक थी वह मेरा नाम लेकर चिल्ला रही थी ।शिक्षिका मेरा नाम लिया कि अनीता त्रिवेदी अध्यक्ष पद के लिए काफी मतों से जीती है, तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

अनीता दुबे की कविताएं

लाल बहादुर शास्त्री जी

सादगी का अद्भुत गहना,
भारत माँ का सच्चा रत्न।
'जय जवान, जय किसान' पुकारा,
जग में पाया गौरव धन।।

नन्हीं काया, दृढ़ इरादा,
सत्य, त्याग का सुंदर धाम।
कर्तव्य पथ पर चलते-चलते,
भारत पाया नवल मुकाम।।

न रुके कठिनाई के आगे,
न झुके कभी विपरीत हवा।
शांति-साहस का संगम बनकर,
जन-जन का विश्वास बना।।

लाल बहादुर नाम अमर है,
भारत की पहचान वही।
त्याग, परिश्रम, बलिदान जिनका,
सदैव रहेगा गान वही!!

कन्या

नन्हीं सी कली मुस्कान भरी,
माँ-बाप के आँगन की रोशनी।
सपनों की उड़ान में लहराए,
भविष्य की राहें खुद सजाए।

संस्कारों की ज्योति जगाती,
पावनता की मूरत कहलाती।
दुःख-सुख में बनती संबल,
घर-आँगन की प्यारी कन्या

कभी बहन, कभी बेटी प्यारी,
कभी ममता की धारा न्यारी।
ईश्वर का अनुपम उपहार है कन्या
जीवन की मधुरतम झंकार है कन्या!!

महागौरी

धवलिमा से दीपित मुखमंडल, शुभ्र चंद्र-सी कांति,
करुणा बरसती दृगों से, सरल स्नेह की शांति।

चार भुजाएँ वरदान दायिनी, त्रिशूल, डमरु धारण,
भक्तों के दुःख हरने वाली, महागौरी वरदायिनी नारि।

सिंहवाहिनी तेजस्विनी, नवदुर्गा में अद्भुत रूप,
अज्ञान हरें, भय मिटा दें, जग में फैले सुख स्वरूप।

भक्ति से जो शरण में आए, मिले कृपा अपार,
कलुष मिटें, मन पावन हो, खुलें मोक्ष के द्वार।

जय महागौरी अंबे माता, कृपा करो जग जननी!!

वृंदावन की धूम

1.वृंदावन में छाई धूम, बजते मुरली तान।
राधा संग श्याम रचें, प्रेमिल रंग महान।।

2.गोप-गोपिनी झूमते, गलियों में हरसात।
रंग-गुलाल उड़ाते, गूंजे जय-जय गात।।

3.फूलों की बरसात है, कान्हा करें श्रृंगार।
राधा की मुस्कान से, महके हर घर-द्वार।।

4.मंदिर की घंटी बजे, भजनों की है धुन।
हर आंगन में आज है, बिखरी प्रेम गुन।।

5.गली-गली में गूंजते, रास-रंग के गीत।
वृंदावन की धूम है, मधुर सदा संगीत।।

त्यौहार हमारे प्यारे न्यारे

रंग-बिरंगी खुशियाँ लेकर,
हर दिल में उत्साह जगाकर,
त्यौहार हमारे प्यारे-न्यारे
बंधन प्रेम के गहरे उतारे।

दीयों की लौ, गीतों की धुन,
भाईचारे का मधुर गुनगुन,
हर रुत में खुशबू फैलाएं,
मिल-जुल कर हम दीप जलाएं।

बरसों की रीति, प्रेम की डोरी,
गाथा कहती हमारी दूरी,
सुख-सम्मान के संग ये सारे,
त्यौहार हमारे प्यारे-न्यारे।

माटी से अपनी प्रीति है

माटी से अपनी प्रीति है,
इसमें ही जीवन की रीति है।
गंध इसकी सुख-शांति लाए,
हर आँगन हरियाली छाए।

पाँव चूमे, माथा सहेजे
बीज बोए, अमृत बहे।
धरती माँ का यही उपकार,
हम सबका है ये संसार।
माटी से अपनी प्रीति है
एक अनोखा रिश्ता।
जमीन से जुड़ी जड़े जीवन की निशानी है,

माटी की महक एक अनमोल धरोहर।
जीवन की सच्चाई एक अनोखी कहानी,
माटी में बोए बीज एक नई शुरुआत।
हरियाली की उम्मीद
जीवन की एक सूरत,
एक अनोखा रिश्ता
एक अनमोल निधि!!

माँ का हर बेटा

उसके दिल का टुकड़ा होता है,
उसकी आँखों में सबसे प्यारा मुकड़ा होता है।
गलती पर भी दुआओं का साया बना रहता,
माँ के दिल में बस ममता का दरिया बहता।

दूर हो या पास, ममता में फ़र्क नहीं आता
माँ का हर बेटा उसके जीने का कारण कहलाता।
दुनिया चाहे जो कहे,
माँ की नज़र में एक समान,
हर बेटे में उसे दिखता है अपना पूरा जहान!!
अनीता दुबे

कारगिल की याद में
बलिदानों का हवन कुंड यह कभी न बुझने पाएगा,
जब तक देश का वीर सिपाही इस पर शीश चढ़ाएगा।
सरहदों पर कितनी ही जवा दिल रोज कटते हैं,
वक्त पर संभाल न पाए तो अक्सर हाथ मलते हैं।
भुजा कटी तड़पती वसुंधरा ,
अब सिर वाला न झेलेगी।
कसम तिरंगे की नारी भी रणभूमि में तलवार उङ्गायेगी!!

राम

राम विराज ही गए अयोध्या में,
अयोध्या नगरी हुई धन्य -धन्य।
500 वर्षों का इंतजार हुआ खत्म,
राम के नए रूप से,
जनता हो रही भाव विभोर।
नर -नारी अश्रु ,
की जलधारा रोक नहीं पा रहे।
श्री राम के शब्दों से जयनाद के स्वर गूंजायमान हो रहे,
राम के दर्शन पा जनता हो रही भाव विभोर!!

मैया विनती करु,

मैया विनती करु,
दोनों कर जोरी।
मैया अन्न भी दिया,
तूने धन भी दिया
छज्जे चौबारे बहुत दिए।
मैया विनती करु.....
मैया एक विनती, हम बहनों की।
करो चटक चुनरिया बहनों की
एमअस्तु कहे दुर्गा बोली,

तेरी मनसा पूरण हो बहनि!!

जगदंबे जगत जननी

जगदंबे जगत जननी दोनों को अमर कर दो,
यह सुहाग अमर कर दो मेरा लाल अमर कर दो,
एक मांग का मोती है एक आंख का तारा है
जगदंबे जगत जननी दोनों को अमर करदो.......
एक मन में समाया है,
एक मन को भाया है।
जगदंबे जगत....
एक कुल का दीपक है,
एक कुल का उजाला है।
जय जगदंबे जगत जननी दोनों को अमर कर दो
मेरा लाल अमर कर दो यह सुहाग अमर कर दो!!

गुड़हल का फूल हूं,

वैशाखे की तपती धूप में भी मुस्कुरा रहा हूं।
कभी भगवान के शीश पर शोभायमान हूं,
तो कभी दवाइयों के रूप में
मानव के काम आता हूं
मुझे सीखो मुस्कुराना,
इस क्षणभंगुर जीवन में कभी न
अपना अस्तित्व खो यही कह सकता हूं!!

राधा -कृष्ण

मेरा शीश वही झुकता है,
जहां राधा कृष्ण को पूजा जाता।
समझ सका ना कोई जग में,
सुख- दुख की क्या है परिभाषा।
कहें इसे एक भूल भुलैया,
या जीवन का एक तमाशा जीने को तो सब जीते हैं ,
जो भी है इस जग में आता।
सच्चा जीवन उसी मनुष्य का,
जो रखता हो राधा- कृष्ण से नाता।

मां

अंगुली पड़कर बेटी
मैंने ,
तुझे चलना सिखाया ।
अब बुढ़ापे की लाड़ी बनकर
तू मुझे भवसागर पार करा दें ।।
मैंने तुझे हर झंझावातों से लड़ना सिखाया ।
दुनिया की हर अच्छी बुरी बातों से अवगत कराया ।
हर कङ्गिन डगर पर लड़ना सिखाया ,
ताकि आने वाले तूफान का
तू डटकर मुकाबला कर सके ।
जीवन भर मैं तेरी परछाई रहूंगी ,
पर कभी-कभी तुझे अकेले भी लड़ना पड़ेगा,
तब बेटी तू कमजोर न पड़े,
इसीलिए तुझे अच्छे बुरे का ज्ञान देती हूं ।।
आखिर तेरी मां हूं!!

मेरे जीवन साथी

मेरे जीवन साथी हर सुख दुख में साथ रहो,
यही कामना से माता-पिता ने तुम्हें जीवन साथी चुना है।
जीवन के इस चक्र में उतार चढ़ाव जो आएंगे
उनको मिलकर हम बाटेंगे ,
एक उम्र के पड़ाव में अब न गिले हैं न शिकवे है।
केवल और केवल शांति की खोज है, मेरे जीवन साथी
मेरे जीवन की नैया पार लगा देना, बस इतनी चाह है!!

मेरे अपने

इस जग में मानव जीवन पाया है
तो सभी मेरे अपने हैं।
किसको पराया कहूं ,
और किस को बेगाना।
क्षणभंगुर संसार में काहे का राग
काहे का द्वेष,
सभी मेरे अपने हैं
क्या सगे -संबंधी क्या पड़ोसी
सभी मेरे अपने अजीज हैं!!

सीता सम कोई कहीं नहीं

सीता सा सरल हृदय पर मां भवानी धन्य हुईं,
जनक की पुत्री कहला।
वैदेही ने सीता का नाम सार्थक किया,
राम को पति रूप में पाकर
सीता सम कोई कहीं नहीं की महिमा बताई
अग्नि परीक्षा देकर सीता ने इस धरती पर महिलाओं के सतीत्व को बचाया।
इसलिए भी
सीता सम कोई कहीं नहीं !!

नर्मदा की अपार महिमा

नर्मदा तेरी कीर्ति अपार ,
नाम ले ले हों भव से पार।
दिव्य परिधान रही तू धार,
धार से पड़ते बेड़ा पार।
शंभू की सुकुमारी बेटी,
भूमि पर तारणे आई।
तीर्थ जननी बनकर आई,
भक्त जग को अतिशय भायी।
हुई जन गण को सुखदायी,
निछावर वह तुम पर मायी।
किये जो तुमसे सच्ची प्रीति,
रही ना उनको कोई भीति
करे जो तेरा नित्य गुणगान ,
सदा होता उसका कल्याण!!

बसंत

मुखड़ा हुआ अबीर लाज से,
अंकुर फूटे आस के।
जंगल में भी रंग बरसे हैं,

दहके फूल पलाश के।
मादकता में आम की डाली,
झुककर हुई विभोर।
कोयल लिखती प्रेम की पाती,
बांचे मादक मोर हैं।
सरसो ने भी ली अंगड़ाई,
पोर पोर में प्यार है।
मौसम पर मादकता छाई,
किसको अपना होश है।
धरती डूबी है मस्ती में,
बसंत का यह जोश है!!

ईर्ष्या

ईर्ष्या की आग, जलती रहती है,
दिल में जलन, कभी नहीं बुझती।
किसी की सफलता, किसी की खुशी,
हमें जलाती है, हमें खाती है।

ईर्ष्या की बीमारी, बहुत ही खतरनाक है,
यह हमें अंदर से खोखला बनाती है।
हमें अपने आप को पहचानना होगा,
और ईर्ष्या की आग को बुझाना होगा।

जलन की भावना, हमें नीचा दिखाती है,
हमें अपने आप को कम आंकने पर मजबूर करती है।
लेकिन हमें यह समझना होगा,
कि हमारी अपनी पहचान और मूल्य हैं।

तो आइए, ईर्ष्या की आग को बुझाएं,
और अपने आप को पहचानें।

माँ

राह दिखाई तुमने हरदम ,
माँ तेरा जब ध्यान किया।
अंधकार से मुझे उबारा,
परम सत्य का ज्ञान दिया।
जीवन के झंझावातों में,
तेरा ही एक सहारा था।
मिला एक सम्बल तेरा जब,
सब ने किया किनारा था।
तेरी इस अनुकंपा से ,
अब वंचित न हो जाऊं मैं।
माँ ऐसा आशीर्वाद दे ,
काम किसी के आऊं मैं!!

पितृ हमारे देवता

पितृ हमारे देवता जीवन का आधार,
उनकी कृपा से जगमग, होता हर परिवार।

उनके श्रम से खिला, सुख का यह उद्यान,
उनके चरणों में ही है, सारा जग सम्मान।

त्याग तपस्या से गढ़ा, हमको जीने का मार्ग,
उनकी छाया में मिलता, हर दुख से उद्धार।

श्राद्ध तर्पण से सदा, करते हम स्मरण,
पितृ हमारे देवता वे ही परम आधार!!

अनंत चतुर्दशी आराधना

अनंत चतुर्दशी का दिन आया,
गणपति बप्पा घर-घर छाया।
विघ्नहर्ता सब दुख हर लेते,
सिद्धिविनायक सुख बरसाते।।

मोदक प्रिय मंगल के दाता,
करुणा से हर मन को भाता।
भक्तों की नैया पार लगाते,
अनंत सुख का मार्ग दिखाते।।

शंख, ध्वनि, आरती की ज्योति,
भक्ति लहर बहती हर ओर।
गणपति बप्पा मोरया गूँजे,
अनंत कृपा से जीवन पूजे!!

कितना आसान है

सत्य को न स्वीकारना करना,
कितना आसान है ,किसी को नीचा दिखाना।
कितना आसान है किसी को मूर्ख बनाना,
कितना आसान है दिखावा करना।
कितना आसान है किसी के विश्वास को तोड़ना,
किसी के साथ विश्वास घात करना!!

महालक्ष्मी

दीप जले हर द्वार पे, गूँजे मंगल गान,
आओ माता लक्ष्मी जी, भर दो सुख-धान।

कलश सजे, रोली चढ़े, फूलों की बरसात,
आराधन से ज्योतियाँ, करें शुभ प्रभात।

धन की देवी, ऐश्वर्य की, दात्री जगदंबा,
तेरे चरणों में विराजे, श्रद्धा की गंगा।

अन्नपूर्णा, सिद्धिदायिनी, भव सुख की धारा,
तेरे बिना जग में माता, सब कुछ है बंजारा।

महालक्ष्मी पूजन से मिटे, दरिद्रता का भार,
हर घर में समृद्धि रहे, हो शुभ त्योहार।

संवाद

शब्दों से जब पुल बनते हैं,
मन के सागर मिलते हैं।

संवाद सच्चा हो तो फिर,
दिल के द्वार भी खिलते हैं।।

मन की गांठें ढीली होतीं,
दूर अंधेरे छँट जाते।
संवाद की मीठी भाषा से,
नये उजाले जन्म पाते।।

जहाँ न कोई छल-कपट हो,
सिर्फ़ भरोसा, स्नेह का साथ।
संवाद वही अमृत बन जाता,
जो कर दे जीवन को उजागर!!

माँ के हम हैं लाड़ले

माँ के हम हैं लाड़ले
दुलार की छाँव में,
जीवन की हर राह सजी, उसके ही भाव में।

उसकी ममता के स्पर्श से, दुख सारे मिट जाते,
आँसू बनते मोती, जब आँचल में सिमट जाते।

हमसे बढ़कर क्या उसे,
जग में कोई प्यारा,
उसके बिना अधूरा है, सुख का हर इशारा।

माँ के हम हैं लाड़ले उसकी आँखों का नूर,
उससे ही जीवन खिला, जैसे बगिया भरपूर!!

द्वार

द्वार पे खड़ी प्रतीक्षा, आशा की झलक लिए,
अतिथि, सुख-समृद्धि संग, आने की आस लिए।

द्वार ही साक्षी बनता, विदा और आगमन का,
मिलन-बिछोह समेटे, जीवन हर क्षण का।

द्वार पर दीपक जलाकर, घर का मान बढ़ाते,
द्वार से ही संस्कृति के, मंगल गीत सुनाते।

बाढ़ की विभीषिका

जलधारा ने घर निगले, सपनों का सब गाँव,
बचपन की गलियां डूबीं, बिखर गया सुख-छांव।

ईंट-पत्थर सब रो रहे, टूटी जीवन डोर,
लहरों में आशा डूब गई, सुन लो विधि का शोर।

नाव ही आश्रय बन गई, छतों पर बैठे लोग,
भूखे-प्यासे बच्चे सहें, संकट के संजोग।

हे करुणा के दाता प्रभु, कर दो कृपा अपार,
सूखें जल के सैलाब सब, मिले नया आधार।

कार्तिक मास के पावन पर्व

आया कार्तिक शुभ पावन मास,
भक्ति रस से भरती हर चाह।
दीप जलें हर द्वार-द्वार,
छाई खुशियाँ, मिटा अंधकार।

गंगा स्नान का पुण्य महान,
भोर भये गूँजे हर तट गान।
हरि नाम का हो मधुर उच्चार,
जप-तप में लीन जग सारा संसार।

गोवर्धन पूजा, अन्नकूट महोत्सव,
भक्ति भाव का होता संगम नव।
तुलसी विवाह का मंगल गीत,
गूँज उठे आँगन-आँगन प्रीत।

देव दीपावली जब आती,
काशी नगरी जगमगा जाती।
दीपों से सजे घाट और गली,
हर मन में बसती हरि की गली।

कार्तिक मास का है अद्भुत दान,
लाता सुख-शांति का वरदान।
जो करे भक्ति, ध्यान लगाकर,
पाए जीवन में सुख अपार।

हरी-भरी वसुंधरा

हरी-भरी वसुंधरा जीवन का आधार,
फूलों की मुस्कान है, उपवन का श्रृंगार।

सागर की गहराई, नदियों का प्रवाह,
पर्वत की ऊँचाई, देता सुख अथाह।

पंछी करते कलरव, गाते प्रेम गीत,
हरित धरा के आँचल में है स्नेह असीम।

शस्य-श्यामला धरती, देती अन्न अपार,
माँ-सी ममता लुटाती, करती सबका उद्धार।

आओ करें रक्षा इसकी, सहेजें हरियाली,
धरती का हर कोना हो,
खुशबू से सुगंधित!!

'अंधकार'

सुख का सूरज अस्त हुआ है,
अंत हुआ रिश्ते नातों का।
नहीं भरोसा अब होता है, मायावी झूठी बातों का।
सुदंर बाग उड़ता देखा, आँखों से हमने यह अपना।
संस्कार सब हवा हो गये, बिखर गया सारा सपना।
लुटते आये और लुटेगें,

किस्मत है कुछ ऐसी पाई अंग्रेजों ने लूटा था अब ,लूट रहा अपना ही भाई।
अट्टहास करती महंगाई, इङ्गलाती कालाबाजारी।
श्रमिक आज है भूखा मरता, पनप रहे हैं भ्रष्टाचारी।
नहीं प्रभात से मेरा रिश्ता, दर्द जहां हो आधातों का ।
भाया करता मुझे सदा ही, सन्नाटा काली रातों कल।

बाढ़ का दृश्य

जलधारा ने घर निगले, सपनों का सब गाँव,
बचपन की गलियां डूबीं, बिखर गया सुख-छांव।

ईंट-पत्थर सब रो रहे, टूटी जीवन डोर,
लहरों में आशा डूब गई, सुन लो विधि का शोर।

नाव ही आश्रय बन गई, छतों पर बैङ्गे लोग,
भूखे-प्यासे बच्चे सहें, संकट के संजोग।

हे करुणा के दाता प्रभु, कर दो कृपा अपार,
सूखें जल के सैलाब सब, मिले नया आधार।

चाँद की चाँदनी

शीतल नीरव रजनी में, मुस्काता चाँद सुहाना,
जैसे कोई प्रेम कथा का, बन गया हो अफसाना।

नीले अम्बर की गोद में, लजाता-सा वो रहता,
कभी ढक जाए बादलों में, कभी जग को मोह लेता।

बच्चे उसको चंदा मामा, कहते हँसकर पुकारें,
माँ की लोरी में वो आता, सपनों के दीप उतारें।

प्रेमी उसको साक्षी मानें, दिल की बात बताने,
कवि बन जाए हर कोई, जब देखे चाँद के ङ्गिकाने।

शीतलता, शांति का दूत, अंधियारे का साथी,
तेरी किरणों में बसती है,
जग की हर संवेदना प्यासी!!

सच्ची दोस्ती

दोस्ती है अनमोल रतन,
नहीं तोल सकता जिसे कोई धन।
सच्ची दोस्ती जिसके पास है,
उसके पास दौलत की भरमार है।
न ही जीत न ही कोई हार है,
दोस्त के दिल में तो बस प्यार है।
बने चाहे दुश्मन क्यों ना जमाना सारा,
सच्चा दोस्त साथ देता है सदा हमारा।
दोस्त के लिए कुर्बान होता है
जीवन सारा ,
हर मुश्किल में बनता है वह सहारा।
भटके जब भी दोस्त संसार के मोहजाल में,
खीच लाता है सच्चा दोस्त उसे अच्छाई के प्रकाश में।
छोड़ देता है जग सारा जब मुश्किल भरी राह में,

सच्चा दोस्त साथ देता है तब जिंदगी की राह में।।
न जीत न ही कोई हार है,
दोस्त के दिल में तो बस प्यार ही प्यार है।।

मेरी हिंदी

मेरी हिंदी मात्र नहीं शब्दों का कोष,
अखिल भावना की परि पोषक।
मानस की जनशक्ति अमोघ,
हिंदी जिसने हिंद तराशा।
हिंदी है भारत की आशा,
अंग्रेजी को विदा करो अब ।
हिंदी है भारत की भाषा,
प्रथम वीरता की हुंकार।
रामराज्य का उज्जवल दर्पण,
तुम ही सूर का तीर।
कलम से रिसती पीर,
केशव का पांडित्य समर्पण।
रीति कामिनी का श्रृंगार,
देव बिहारी पद्माकर के।
काव्य सुमन का सुरमित हार।।
जिन अक्षर अक्षरों पर सज कर,
जीवित है भारत का कण कण ।
क्या एक दिवस हो अभिनंदन,
अर्पित हो जीवन का क्षण क्षण।।

हरियाली धरती

झूमती है फसल जब भी दृष्टि सबका मोह लेती,
पर फटी छाती धरा की ।
नयन अंम्बर के भिगोती,
पर्यावरण दिवस मना कर।
मनुष्य अपनी इतिश्री कर, लेता।
हे मानव जब तुम इस। धरा पर श्रम से पेड़ पौधे,
नहीं लगाओगे तो भविष्य में
ऑक्सीजन कहां से पाओगे।

शाब्दिक विद्रोह

हां मैंने रामायण पढी है,
अर्थ को टटोलती।
मुझसे पूछती लेखनी,
दो राहों पर खड़ी है।
पुराना इतिहास दोहराऊ हूं,
या कटु सत्य लिख जाऊं।
प्राचीनता का मोह है,
और शब्दों में विद्रोह है।
समय की आंधी में ,
सारे आदर्श उड़ गए हैं।
समाज का दर्पण बन,
कुछ पण जुड़ गए हैं।
उम्र से थके दशरथ
बेबस पड़े हैं
क्योंकि उनके राम और भरत बंटवारे को अड़े हैं ।

कौशल्या निपट अकेली है
कोख भी क्या महज पहेली है।
रो रही है अहिल्या राहों में
राम की जो निगाह बदली है
सहमी उर्मिला कुछ बोलती है ।
गली-गली शूर्पणखा डोलती है,
न्याय की प्यासी आंखें लक्ष्मण को टटोलती हैं
राम को पुकारती सीता रावण से घिरी है
और मानस के बदो की भीड़ खड़ी है।

प्यारा भारत

नवभारत के इन पौधों को,
संस्कार के जल से सींचो।
सदाचार की खाद डालकर,
अनाचार से बाहर खींचो।।
निर्भय इनकी रक्षा तुम पर,
तुम हो इस बगिया के माली।
नजर कहीं ना लगे अन्य की,
फूल खिले जो डाली डाली।।
माता-पिता और गुरुओं को,
मेरा मात्र यही संदेश।
सर्वनाश से इसे बचाओ,
अपना प्यारा भारत देश।।

बसंत

वीरों से महकी महकी अमराई,
चलती बयार जैसे बजी शहनाई!
वृक्षों ने पहने लिए टेसू के गहने ,
महुये की महक में बहक उड़े सपने!
कोयल कब से कर रही पुकार ,
आया मस्ती का रंगी त्यौहार!
प्रकृति के क्या कहने.....
भोर मुंडेर पर बोल रहा कागा,
गोरी ने उड़कर झरोखे से झांका !
उनको होली आया खयाल,
द्वार आए ले के गुलाल!
लज्जा से गोरे कपोल हुए,
लाल फीके पड़ गए रंगों गुलाल!
रूप के क्या कहने.....
काका की ढोल पर काकी के फाग,
बदलते मौसम में घुल रही भांग!
काकी के नैनों में बरसों का प्यार,
काका ने मारी पिचकारी की धार!
नहीं आया उम्र का ख्याल,
कुछ पूछो ना उनका हाल!
प्रीति के क्या कहने.....
बरसाने राधा मुरझाई ,
फिर ना आए आज कन्हाई !
उनके घर जा रंग बरसाना, कुछ करना तू ऐसा कमाल! उनको आए जो मेरी याद,
खिल जाए मेरे अंत का हाल!

होली के क्या कहने......!!

विकास परी

आस्था के सोपान पर धीरे-धीरे कदम बढ़ाती,
उपलब्धियों के पंख पर उड़ रही है नारी!
अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर मंडराती आकाश परी,
सागर की गहराइयों को छूती जलपरी!
मौसम की तरह रूप बदलती,
कभी हंसती कभी बिलखती!
जब उपलब्धियों का भार बढ़ जाए,
और एकाकी विकास चल जाये!
घर पनघट की याद आए,
बच्चों का आर्तनाद खीच लाये!
तो वापस आना परिंदों की तरह,
जो उड़कर भी नींड में लौट आते हैं!
तुम्हारे घूंघट हटाने से हमें ऐतराज नहीं,
धन कमाने से परहेज नहीं!
तुम तो परिवार समाज राष्ट्र का विकास,
भारत का गौरवमय इतिहास हो!
वास्तविक परंपराओं को
चुनर ओढ़ अपने रूप को लाज से सवारे रखना!
ताकि विकास की पायल बजती रहे,
और भारतीय संस्कृति की झलक मिलती रहे! !

कर्म ही पूजा

सर्वश्रेष्ठ संस्कृति हमारी संतों का यह देश हमारा ,
सारे पाप हरण करती है गंगा मां की पावन धारा!
समझ सका ना कोई, जग में सुख-दुख की है क्या परिभाषा!
कहे इसे एक भूल भुलैया, या जीवन का एक तमाशा!
जीने को तो सब जीते हैं जो भी है इस जग में आते,
सच्चा जीवन उसी मनुष्य का जो रखता हो प्रभु से नाता!!
सार यही सारे ग्रंथों का गीता हो या रामायण यही भाव है,
श्रेष्ठ जगत में नर में हम देखें नारायण!!

स्वर्णिम पंछी सदा रहेगा

समय के पंख पर उड़ती,
धरा की शाख पर बैठी।
पल-पल युगों से जोड़ती,
कहो किस बात पर रुठी।
सोने चांदी के पिंजड़े,
बांध नहीं पाए उसको।
छप्पन भोगों की महक उड़े,
पर रास नहीं आए उसको।
सब आंगन का दर्द लिए,
ज्वालो से जलती रही सदा।
पंखों में कितने घाव भरे,
हंसकर सहने की वही अदा।
मन पिंजरे में कैद करो तुम,
आपकी पाखी नहीं उड़ेगा।
तृप्ति का गर दाना दोगे,

स्वर्णिम पंछी यही रहेगा!!

वृक्षों की पुकार

अगर मुझको काटने से मिलती उन्हें खुशी,
जाकर कोई बताए करते क्यों खुदकुशी?

मैंने तो धूप बारिश जिनके लिए सही,
यह छाँव ढूंढने को आएंगे फिर सभी यही।

सावन के गीत प्यारे, कोयल की कूक का
महकी हवा के झोंके, दरिया के नूर का।

कुल्हाड़ी से कटकर चंदन यहां खुशबू लुटाता है।

विविध फूलों भरा नंदन बाग भारत कहलाता है।

सदा से बांटते आए खुले मन के खजाने हैं,
जहर पीकर सुधा बांटे यहां शिव के दीवाने हैं।

जाति भाषा बेमानी हम हैं सब हिंदुस्तानी।
यह थी वृक्षों की पुकार हम सब की जुबानी।

जीवन की किताब ये

जीवन की किताब ये
कांटे और फूल दोनों ही,
इस पथ में मिल जाया करते।
कांटों में आनंद किसी को,
कुछ ऐसे फूलों से डरते।
बड़ी विचित्र है यह,
जीवन की किताब भी
कोई चार कदम चल कर ही,
ऐसा गिरा की उड़ ना पाया।
और किसी का साहस देखो,
छोड़ अनेकों पीछे आया।
विचित्र जीवन की किताब ये
जाने कितने पथिक के यहां पर,
मिले और कितने बिछड़े।
कौन बढ़ गया कितने आगे,
रूके कौन कितने पिछड़े।
कोई समझ नहीं पाया
इस जीवन की किताब को

भाव पल्लवन

काल के कपाल में लिखता मिटाता हूँ

मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है। समय की विशाल धारा में हमारे कर्म, सपने और प्रयास लिखे भी जाते हैं और समय ही उन्हें मिटा भी देता है। काल के कपाल पर लेखन का अर्थ है–मानव की साधनाएँ, उसकी रचनाएँ और संघर्ष, जो समय की कठोर गति में स्थायी नहीं रहते।

यह पंक्ति यह संकेत करती है कि जीवन परिवर्तनशील है, स्थिर कुछ भी नहीं। अतः हमें निरंतर कर्म करते हुए, अपने क्षणों को सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि जो बीत गया, वह कभी लौटकर नहीं आता।

यह पंक्ति जीवन की नश्वरता, समय की अजेयता और मानव के कर्मशील रहने की प्रेरणा का प्रतीक है।

अनीता दुबे

शहर समता

अनीता दुबे की ९ लघुकथायें

ममता

सुधा अपने दो भाइयों से छोटी बहन थी।
2 वर्ष की अवस्था रही होगी ।तभी मां का स्वर्गवास हो गया। पिता हरि प्रसाद भी खेती किसानी का काम करते छोटे-छोटे बच्चों की परवरिश की भी जिम्मेदारी कैसे ?निभाएं।
बड़े परेशान रहते हैं।
तभी गांव के एक बुजुर्ग ने सलाह दी बेटा -'हरिप्रसाद अपने लिए ना सही इन तीनों बच्चों के खातिर दूसरा विवाह कर लो'
कई दिनों तक तो हरी प्रसाद कशमकश में रहा कि पुनः विवाह करूं कि नहीं।
पर बिटिया के कारण मैं ज्यादा चिंतित रहता फिर मन कड़ा करके एक दूसरे गांव की गरीब कन्या से कहां विवाह कर लिया ।
कहने को तो रामदुलारी सौतेली मां थी,पर उसने सुधा को इतना प्यार दिया, कि वह बच्ची अपनी सगी मां को भूल गई और पूरा प्यार दुलार वह अपनी दूसरी मां से करने लगी देखते-देखते समय बिता गया सुधा पढ़ लिख कर विवाह योग हो गई। दूसरी मां भी संतान हुई पर रामदुलारी अपनी बड़ी बेटी पर उतनी ही ममता लुटाती की अनजान व्यक्ति तो कह ही नहीं सकता था की दुलारी सुधा की दूसरी मां है!!
अनीता दुबे

'आत्मविश्वास'

किरण सत्तर बसंत पार करने के बाद जब कंप्यूटर और लैपटॉप पर बैठकर अपने काम को करती तो कोई यह नहीं कह सकता कि वह इंजीनियरिंग या तकनीकी की उसके पास डिग्री नहीं होगी पर वह वास्तव में अपने भविष्य के बाइस वर्षों के पीछे की यादों में नहीं जाना चाहती 22 वर्ष पहले उनके बेटे का सड़क हादसे में देहांत हो गया था और उनको अपना जीवन शून्य लगने लगा पर दो-तीन साल तो रात दिन पुत्र की याद काफी दुखी रहती।
'आत्मविश्वास' से उठकर नौकरी की ऑफिस में ही अपने समकक्ष साथियों को देखकर लैपटॉप चलाना सीखा, उसी आत्मविश्वास के बल पर आप ने डिजिटल की दुनिया में एक अलग पहचान बना ली।
अनीता दुबे

वसीयत

अंबिका प्रसाद जी आराम से चारपाई पर लेटे हुए।
चाँदनी रात में सप्त ऋषि तारों को देख रहे थे-पत्नी कमला ने कहा-' सुनते हो अपने 6 पुत्र हैं।'
आपकी उम्र भी 80 वर्ष की हो गई है,क्यों न वसीयत को बनाकर 6 पुत्रों में बराबर से बाँट दें।
इतना सुनकर अंबिका जी ने कहा देखो -'कमला मैंने 6 पुत्रों को इतना पढ़ा -लिखा कर योग्य बनाया हूँ कि वह स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं ऊँचे -ऊँचे पदों पर हैं, किसी को किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है ।अधिक रुपए तो मैंने जोड़े नहीं केवल यही एक ही मकान है मैंने अपनी वसीयत में यही लिखा है कि हम दोनों पति-पत्नी के नहीं रहने पर इसमें शिवजी का मंदिर बनवाया जाए और 6 यों पुत्र इस मंदिर में सहयोग राशि दें।
अनीता दुबे

सुख-दुख

एक गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उसका नाम श्यामलाल था। श्यामलाल के पास एक छोटी सी झोपड़ी थी और वह अपने परिवार के साथ उसमें रहता था।

एक दिन श्यामलाल को एक बड़ा सुख मिला। उसके खेत में अच्छी फसल उगी और उसने बहुत सारा धन कमाया। श्यामलाल बहुत खुश था और उसने अपने परिवार के साथ उस धन का आनंद लिया।

लेकिन कुछ समय बाद श्यामलाल को एक बड़ा दुख भी मिला। उसकी पत्नी बीमार हो गई और उसकी मृत्यु हो गई। श्यामलाल बहुत दुखी था और उसने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बहुत कठिनाइयों का सामना किया।

एक दिन श्यामलाल ने एक बुजुर्ग से मुलाकात की। उस बुजुर्ग ने श्यामलाल से कहा, 'श्यामलाल सुख और दुख दोनों ही जीवन का हिस्सा हैं। हमें सुख के समय में खुश रहना चाहिए, लेकिन हमें दुख के समय में भी मजबूत रहना चाहिए।'

श्यामलाल ने उस बुजुर्ग की बात समझी और उसने अपने जीवन में सुख और दुख दोनों का सामना करने की ताकत प्राप्त की। वह अपने परिवार के साथ खुशी से जीने लगा और उसने अपने जीवन को सुखी और संतुष्ट बनाया।
अनीता दुबे

घरेलू महिला

सुधा बड़े परिवार में विवाह होकर आई। सास- ससुर बहुत ही खुश थे ,कि इतनी सुंदर बहू हमारे घर में आई चार छोटे देवर एक ननंद भी साथ में सुबह से उठकर देवर-ननंद को कॉलेज जाने से पहले नाश्ता तैयार करके देना फिर सबके लिए खाना बनाना पर चेहरे पर एक शिकवा- शिकायत नहीं।
दोपहर को जब थोड़ा समय मिलता तो सिलाई कढ़ाई में भी अपना हुनर प्रदर्शित कर देती। घर की बाउंड्री के अंदर सामने छोटे से बगीचे में भी साग -सब्जी लगा रखी थी।
उसमें भी थोड़ा समय निकालकर पानी वैगर पौधों में देती।
मोहल्ले की औरतें शांति देवी से कहती -' बड़ी भाग्यशाली हो शांति जी जो ऐसी बहू पाई हो'

सास भी मुस्कुराकर हामी भर देती।
कुछ वर्षों में देवरों की भी शादी होते-होते समय में भी परिवर्तन आने लगा वही थोड़ी पढ़ी-लिखी बहुएं आने लगी शांति देवी के घर
जब पांचवें बेटे सतीश के विवाह के लिए उमाशंकर जी अपनी कन्या का विवाह पक्का करने आए तो देवी शंकर जी से कहने लगे क्या? आपकी बड़ी बहू पढ़ी-लिखी नहीं है तब देवी शंकर जी को बहुत गुस्सा आया उन्होंने कहा-' साहब मेरी बड़ी बहू सुधा पढ़ी लिखी नही' घरेलू महिला जरूर है पर प्रत्येक कार्य में इतनी दक्ष है कि आजकल की लड़कियाँ क्या होगी सुधा से तो सबको सीख लेनी चाहिए।
अनीता दुबे

आंतरिक सौंदर्य

श्यामा अपने भाई बहनों में सबसे बड़ी थी, पिता की असमय मृत्यु से उसे काफी उम्र से पहले ही समझदार बना दिया था।
अपनी पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ हर कार्य में बहुत ही दक्ष
अपने जीवन के 50 बसंत पर करते-करते वक्त काफी परिपक्व हो गई थी छोटे भाई बहनों को पढ़ा- लिखा कर योग बना दिया बहन को भी प्रत्येक कार्य में निपुण करके विवाह कर दिया।
श्यामा की माँ सरोज भी उसके कामों की सराहना करते नहीं थकती।
श्यामा नाम से ही ज्ञात होता है कि रंग उसका बहुत दबा हुआ था, इसी कारण भी श्यामा का विवाह नहीं हो पा रहा था पर मन इतना शांत वह सरल हृदय की आस-पड़ोस व अपने ऑफिस में सब का दिल जीत लेती।
श्यामा के अधिकारी पांडे जी यह कहते नहीं थकते थे -'कि मैंने इतनी लड़कियां अपने कार्यालय में देखी पर जो शालीनता श्यामा में है' वह किसी में नहीं शिष्टाचार बड़ों का मान सम्मान कोई श्यामा से सीखे।
पांडे जी ने तो 26 जनवरी को अपने भाषण में यह कहते हुए -'श्यामा को नवाजा की आंतरिक सौंदर्य को देखना चाहिए ना कि बाहरी ताम-झाम को।
अनीता दुबे

ममता

प्राची अपनी नौकरी के साथ-साथ घर की भी जिम्मेदारी बड़ी खूबी से निभाती चली आ रही थी, पर भगवान के आगे किसी का वश नहीं चलता।
प्रशांत से विवाह हुए 4 वर्ष बाद उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई पर यह क्या?
10 दिन के बाद ही बच्चे का देवगमन हो गया।
प्राची काफी उदास रहने लगी पड़ोस में रहने वाली नमिता चाची ने यह खबर सुनी तो उससे मिलने के लिए उसके घर आई उन्होंने कहा -'प्राची दुखी मत हो जो होना था 'वह ईश्वर के हाथ में था ।अगले महीने भादो के शुक्ल पक्ष की सप्तमी आ रही है ।यह व्रत संतान सप्तमी के नाम से रखा जाता है तो तुम भी यह व्रत कर लेना ,भगवान शिव और माता पार्वती जल्दी ही तुम्हारी फिर से गोद भरेंगे।
उनके ममता भरे वाक्य सुन कर प्राची गदगद हो गई।
अनीता दुबे

संशय

एक समय की बात है, एक व्यक्ति था जिसका नाम राजेश था। वह अपने मित्र के साथ एक जंगल में घूमने गया था। चलते-चलते वे एक नदी के किनारे पहुंचे।

राजेश ने देखा कि नदी का पानी बहुत गहरा और तेज था। उसने अपने मित्र कवीश से कहा, 'मैं इस नदी को पार नहीं कर सकता, मुझे लगता है कि इसमें डूब जाऊंगा।'

उसके मित्र ने कहा, 'राजेश तुम मुझे जानते हो, मैं एक अच्छा तैराक हूँ। मैं तुम्हें नदी पार करा सकता हूँ।'

लेकिन राजेश को संशय था। उसने कहा, 'क्या तुम मुझे वादा कर सकते हो कि मैं सुरक्षित रहूंगा?' उसके मित्र ने कहा, 'हां, मैं वादा करता हूं।'

लेकिन राजेश का संशय अभी भी बना हुआ था। उसने कहा, 'क्या होगा अगर तुम मुझे धोखा दे दो?' उसके मित्र ने कहा, 'मैं तुम्हारा मित्र हूं, मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा।'

अंत में, राजेश ने अपने मित्र पर भरोसा किया और नदी पार कर गया। वह सुरक्षित रूप से दूसरी ओर पहुंच गया।

इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि संशय एक ऐसी भावना है जो हमें आगे बढ़ने से रोक सकती है। लेकिन अगर हम अपने मित्रों और परिचितों पर भरोसा करें और उनके वादों पर विश्वास करें, तो हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।
अनीता दुबे

उपहार की कीमत

ददुआ महावत प्रतिदिन की भांति रामू (हाथी) को
लेकर नेशनल पार्क में विदेशी पर्यटक की राह देख रहा था, कि कब मैं भी अपने हाथी पर बैठाकर शेरों को दिखाऊंगा घने जंगलों में।
पर उसे दिन उसके दस वर्षीय बेटे राम ने रात से ही ज़िद पकड़ ली की-' बाबू आज मैं भी आपके साथ शेरों को देखने चलूँगा'
ददुआ ने बहुत समझाया बेटा -'भोर फटने के पहले ही मुझे घने जंगलों में जाना पड़ता है'
पर बलहट के सामने ददुआ लाचार हो गया और कहा चलो लंदन से आए विदेशी पर्यटकों को लेकर जब घने

जंगल में ददुआ पहुंचा क्योंकि उसको अच्छे से पता था। कहां पर शेर शिकार करके अपने परिवार के साथ आराम करते हैं।विदेशी पर्यटक भी खुश हो गये खुले में शेरों को देख कर
।नन्हे बालक का पिता को भी ज्यादा ध्यान नहीं रहा।घने जंगलों वह सुबह की ठंडी हवा से राम को नींद का झोंका आ गया और हाथी की पीठ से एकदम नीचे गिर गया।तभी शेरों के झुंड में से एक शेर ने राम को घसीट का जंगलों में ले गया जब तक सब समझ पाते काफी देर हो गई।लंदन से आए पर्यटक जॉर्ज बहुत दुखी हुए ददुआ को कुछ सहयोग राशि देना चाहिए पर उसने साफ इनकार कर दिया उसने कहा-' यदि मुझे देना ही है तो जो आप यह बंदूक रखे है वह दे दीजिए।'
ताकि भविष्य में और किसी के बच्चे की जान इस प्रकार न जा सके।जॉर्ज ने एक मिनट की भी देरी न करके ददुआ को वह बंदूक उपहार मैं दे दी।
अनीता दुबे

शहर समता

अनीता दुबे की ३ कहानियाँ

हरि नाम सबसे बड़ा

एक छोटे से गांव में एक वृद्धा रहती थी–नाम था लक्ष्मी माई उसकी झोपड़ी टूटी-फूटी थी, तन पर चिथड़े थे, पर चेहरे पर अपार शांति और आनंद झलकता था। गाँव के लोग कहते थे, 'उसके पास कुछ नहीं है, फिर भी हर समय मुस्कुराती रहती है।'

लक्ष्मी माई का एक ही आधार था – 'हरि नाम'। सुबह से शाम तक वह बस एक माला जपती रहती
'राम राम राम...'

गाँव में एक दिन अकाल पड़ा। खेती सूख गई, कुएँ रीते हो गए, लोगों के चेहरों पर डर और चिंता पसर गई। कई लोग गाँव छोड़ने लगे। पर लक्ष्मी माई वहीं रही, माला जपती रही, और सबको समझाती रही –
'हरि नाम से बड़ा कोई सहारा नहीं। राम नाम से ही संकट कटते हैं।'

लोग उसकी बातों पर पहले हँसते थे, पर जब सब उपाय विफल हो गए, तो कुछ लोग उसके पास आकर बैठने ल गे।
धीरे-धीरे उसका छोटा सा आँगन रामनाम के जप से गूंजने लगा।

कुछ ही हफ्तों में गाँव में बारिश हुई। कुएँ भर गए, खेत लहलहा उठे। सबका चेहरा खिल गया।

गाँव के बुजुर्ग बोले
'यह हरि नाम का चमत्कार है। लक्ष्मी माई ने विश्वास नहीं छोड़ा, तभी गाँव बच गया।'

तब से उस गाँव में एक परंपरा शुरू हुई –
हर सुबह गाँववाले मिलकर 'राम नाम' का संकीर्तन करते।

और आज भी, उस गाँव के द्वार पर एक पत्थर पर लिखा है:
हरि नाम सबसे बड़ा – वही रक्षा करता है।
अनीता दुबे

पापी कौन?

बीहड़ जंगलों से निकाल कर जब डाकू राजेंद्र सिंह गांव के अंदर प्रवेश करता तो गांव वासियों की धड़कनें प्रायः रुक सी जाती।
घोड़े की पद चापो से सब का दिल दहल जाता कि आज क्या कहर ढाने वाला है, डाकू राजेंद्र सिंह ढाना के छोटे से गांव में हड़कंप जाती और लोग अपनी-अपनी झोपड़ी में दुबकर किवाडे बंद कर लेते कहीं किसी को उठाकर ना ले जाए यह डाकुओं का गिरोह पर होनी के आगे सब नत- मस्तक है एक दिन ऐसी ही घटना घटी जब डाकुओं के समूह ने पंडित दीनदयाल त्रिपाठी के घर से उनके चार वर्षीय पुत्र का अपहरण कर लिया और फिरौती में लाखों की मांग कर दी बेचारे पंडित जी के पास इतने रुपए तो नहीं थे कि वे डाकुओं की मांगी राशि को दे पाते समय धीरे-धीरे बीतता गया ।डाकुओं का समूह उस गांव के बालक को लेकर दूसरे बीहड़ो में आ गया बाल क भी बड़ा होता गया तभी डाकू राजेंद्र सिंह का आतंक सर चढ़कर बोल रहा था।
उस गांव से लगे जिले में जब एस .पी. प्रफुल्ल त्रिवेदी तबादला होकर आए तो उन्होंने भी डाकू के आतंक का खत्म करने का मन में विचार बना लिया कि मैं इसे जिंदा या मुर्दा तो पकड़ कर ही रहूंगा और एक दिन घेराबंदी करके उन्होंने डाकू राजेंद्र सिंह को पकड़ना चाहा पर वह जिंदा तो नहीं पकड़ा पर पुलिस की गोलियों से मृत्यु अवस्था में जरूर हाथ लगा।
तब उस के पास पंडित दीनदयाल त्रिपाठी जी का छोटा बालक भी मिला जब उस बालक को एसपी प्रफुल्ल त्रिवेदी ने दीनदयाल जी को सौंपना चाहा तो उन्होंने कहा-' साहब आप अपने पास ही रखें तो बालक का भविष्य बन जाएगा' तब एसपी साहब ने कहा-'मेरे से तो बहुत पाप भी होते हैं'तब पंडित जी ने कहा -'यह तो भगवान ही जानते हैं एस.पी. साहब के पापी कौन? है
मारने वाला या बचाने वाला!
अनीता दुबे

यथार्थ की परतें

रात का अंधेरा गहराने लगा था। हिमांशु अपने कमरे में बैठा खिड़की से बाहर झाँक रहा था। बाहर चमकती हुई रोशनी, चहल-पहल और रंगीन परदे जैसे दुनिया को चमकदार दिखा रहे थे। लेकिन उसकी आँखें उन रोशनियों के पार देख रही थीं–वहाँ, जहाँ सच्चाई अक्सर छिपी रहती है।

दफ्तर में सब उसे सफल मानते थे। अच्छी नौकरी, बढ़िया वेतन, परिवार की जिम्मेदारी निभाने वाला इंसान। ल ेकिन भीतर से वह जानता था कि उसके मन पर कितनी परतें चढ़ी हुई हैं।

एक परत थी मुस्कान की, जो हर सुबह चेहरे पर लानी पड़ती थी, चाहे दिल भारी हो।

दूसरी परत थी सपनों की, जिन्हें उसने हालात के बोझ तले दबा दिया था।

तीसरी परत थी कर्तव्य की, जिसने उसे अपने मन की इच्छा के विरुद्ध चलने पर मजबूर किया।

उसकी पत्नी भी हँसती थी, बच्चे भी खेलते थे, पर उनके जीवन में भी यथार्थ की परतें थीं। पत्नी अपनी थकान छुपाकर सेवा करती थी, बच्चे अपनी छोटी-छोटी इच्छाएँ दबाकर 'अच्छे' कहलाने की कोशिश करते थे।

एक दिन अचानक हिमांशु की मुलाक़ात अपने पुराने मित्र अजय से हुई। अजय न ज्यादा पैसे वाला था, न ही पद-प्रतिष्ठा वाला। मगर उसकी आँखों में एक अजीब-सी चमक थी–सच्चे संतोष की। हिमांशु ने पूछा- 'तू इतना निश्चिंत कैसे रह लेता है? तेरे पास तो वो कुछ भी नहीं जो समाज सफलता मानता है।'

अजय ने मुस्कराकर कहा,
'भाई, मैंने अपने जीवन की परतें उतारना सीख लिया है। झूठी शान, दिखावा और दूसरों की अपेक्षाओं की परत हटाई तो पाया कि यथार्थ बहुत सरल है। सुख उसी में है, जो हम भीतर महसूस करें, न कि बाहर दिखाएँ।'

उस दिन हिमांशु को समझ आया कि यथार्थ की परतें दरअसल हमारे अपने ही बनाए आवरण हैं। जब तक उन्हें उतारकर असली सच्चाई को नहीं देखेंगे, तब तक जीवन अधूरा और भारी लगेगा।

और उस रात पहली बार हिमांशु ने खिड़की से बाहर नहीं, बल्कि अपने भीतर झाँका।
अनीता दुबे

शहर समता

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

- देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
- सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
- रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
- लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
- जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
- लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
- जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
- हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
- भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
- गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
- दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
- तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
- प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
- भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
- इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
- शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
- बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
- रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
- कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
- भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
- दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
- मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
- बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
- आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
- बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
- पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
- सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
- धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
- रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
- मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
- कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
- पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।